हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A. I

विषय — प्रेमाख्यान काव्य या सूफी काव्य :—

हिन्दी भक्ति की प्रेममार्गी शाखा भी प्रेम पर ही आधारित है। अलौकिक सौंदर्य-भावना से परिपूर्ण यह प्रेम अनिमायक, समस्त विधि-विधानों से परे स्वयं प्रमाण है। हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के आरम्भ से पूर्व ही एक ऐसी परम्परा का परिवर्तन हो चुका था, जिसे विभिन्न



विद्वानों ने विभिन्न नामों से पुकारा है, यथा प्रेममार्गी, प्रेमाख्यान काव्य, सूफीकाव्य आदि। इस परम्परा के काव्य-ग्रन्थों में प्रेमतत्व की प्रमुखता है, किन्तु उनका प्रेम-तत्व परम्परागत भारतीय श्रृंगार-भावना से थोड़ा भिन्न है। जहाँ सामान्यतः श्रृंगार-काव्यों में विवाह, दाम्पत्य एवं सामाजिक जीवन की मर्यादाओं को स्वीकार करके चलने वाले गार्हस्थिक प्रेम का निरूपण हुआ है, वहीं इनमें शुद्ध स्वच्छन्द पूर्ण सौंदर्य भावना, साहसिक क्रिया-कलाप एवं समाज-विमुख प्रणय-भावना का चित्रण हुआ है।

रविवार 25

इस प्रवृत्ति को विश्वसाहित्य के संदर्भ में रोमांस अथवा स्वच्छन्द प्रेम कहा गया है।

भारतवर्ष में सूफी मत का सूत्रपात तेरहवीं शताब्दी में रुवाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के ~~आविर्भाव~~ आविर्भाव काल से माना जाता है। उनके बाद पन्द्रहवीं शताब्दी तक कई और सूफी सम्प्रदाय स्थापित हुए। सूफी अपने सरल साधनामय जीवन एवं उच्च आध्यात्मिक विचारों के लिए प्रसिद्ध थे। सूफी कवियों ने लोक प्रचलित कथानक लेकर अपने आध्यात्मिक विचारों की अभिव्यंजना की।

सोमवार 26

सूफी कवियों ने पुरुष के उत्कट प्रेम और प्रियतमा को प्राप्त करने की साधना का उल्लेख किया है। प्रेम एक अलग ही रोग है जिसमें देवी अनुभूतियाँ होती हैं। इसकी ज्वाला तर्क के सहारे नहीं की जा सकती। प्रेम स्वयं ही ज्वालाकार है। यह ठीक सूर्य के समान है। सूर्य को किसी प्रमा की आवश्यकता नहीं, उसी तरह प्रेम भी स्वयं प्रमा है। प्रेम का यह अलौकिक सौंदर्य सार्वभौमिक प्रमा है। ऐसे अलौकिक सौंदर्य से ही प्रेम की उत्पत्ति होती है। इस संसार में प्रेम को छोड़कर

कुछ भी सुन्दर नहीं : ——
" तीन लोक चौदह खंड सबै परै मोहि सूझि ।
प्रेम छाँड़ि किछु और न लोना, जो देखौ मन बूझि।"
(पद्मावत)

इस शाखा के कवियों ने कहा है कि जहाँ रूप है, वहीं प्रेम भी है। रूप और प्रेम में शशि-किरण, हिम-जल का संबंध है। जहाँ रूप का प्रसार है, वहीं प्रेम का व्यवहार है। प्रेम और रूप का अभेद जैसा इन कवियों में उपलब्ध है, वैसा अन्यत्र नहीं।

किन्तु प्रेम का मार्ग जितना शुक्रवार 30
सुन्दर है, उतना ही कष्टदायक भी है। प्रेमी साधक मार्ग के कंटकों की चिन्ता न करते हुए अपने निश्चित लक्ष्य की ओर बढ़ता जाता है उसे अपने हित-अनहित की भी चिन्ता नहीं रहती। प्रेम मदिरा के समान है जिसने इसे पी लिया; वह मतवाला हुआ, जो संसार को तुच्छ स[मझता] है, वह अपने आप को खो देता है। समुद्र [में] बूँद की भाँति वह अपने अस्तित्व को मिटाने [में] ही आनन्द प्राप्त करता है। यह प्रेम ही आ[नन्द]प्रद है। इससे एकनिष्ठा उत्पन्न होती [है]

2019 अक्तूबर

रविवार

प्रेमी पूर्ण आत्मसमर्पण कर देता है। सूफी मत के अनुसार जीवात्मा प्रीति की रीति में बन्ध कर ही विरह - व्यथा से पीड़ित होती है। प्रेममार्ग में बाह्य शारीरिक पक्ष गौण और आन्तरिक पक्ष प्रधान है। उनका अंतिम लक्ष्य आत्म - दर्शन है। इसलिए सूफी कवियों ने प्रेम को आध्यात्मिक रूप प्रदान किया है। सूफी कवियों के अनुसार ईश्वर एक है जिसे हक़ कहते हैं। उसमें और आत्मा में कोई अन्तर नहीं है। उनमें अद्वैत भावना है। आत्मा या बन्दा

सोमवार

इश्क के सूत्र से हक़ तक पहुँचता है। प्रेम के नशे में ही ईश्वर की अनुभूति होती है और माया (शैतान) साधक को निर्दिष्ट मार्ग से विचलित करने का प्रयास करता है। माया (शैतान) से बचने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। इन्हीं व्यापक सिद्धान्तों को लेकर प्रेम - काव्य का चित्रण हुआ है। इन्हीं सिद्धान्तों पर जायसी तथा अन्य सूफी कवियों का रहस्यवाद आधारित है।